1968F An inspiring letter by Rishabh Das Ranka

Ek Preranapad Patr (In Sanmati Sandesh, 1968)

एक प्रेरणा प्रद पत्र

(श्री पं० हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री)

स्व० श्री ऋषभदास जी रांका से सारा जैन समाज भली भाँति परिचित हैं। वे भारत जैन महामण्डल के मन्त्री ही नहीं, अपितु प्राण थे। उन्होंने जीवनभर जैनसमाज के विभिन्न सम्प्रदायों में एकता स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किया। उनका देहावसान दि० १०-१२-७७ को हो गया है। उसके पूर्व उनका पहला आपरेशन १० नवम्बर को, और दूसरा २२ नवम्बर को हुआ। उसके बाद वे अपने निवास स्थान पर आ गये। इस बीच उन्होंने मित्रों के समागत पत्रों के उत्तर दिये। प्रस्तुत पत्र उन्होंने ब्यावर निवासी श्री सोहनलाल जी बुर्ड को मृत्यु से दो दिन पूर्व लिखा, जिसमें उन्होंने लिखा है कि 'आपरेशन के दिन को छोड़कर आसन ध्यान बराबर चलता रहा और आज भी नियमित चल रहा है।' इतने बड़े आपरेशनों के बाद अत्यन्त अशक्त हो जाने पर भी उनकी मनोवृत्ति कितनी निर्मल रही, यह पत्र पढ़ने पर पाठक स्वयं अनुभव करेंगे। उनके पत्र को अविकल रूप से यहाँ दिया जा रहा है—

भाई सोहनलाल जी,

आपका ६-१२-७७ का पत्र मिला। आपके पत्र का उत्तर मैंने आगास दिया था, शायद वह पत्र न मिला हो। पत्र का उत्तर देने में अब तक ढील नहीं होती।

मैं ८-११-७७ को बांबे हास्पिटल में भर्ती हुआ और पहला आपरेशन १०-११-७७ व दूसरा २२-११-७७ को हुआ। ब्लडर (मूत्राशय) केंसर के टयुमर्स (गांठों) का, दोनों आपरेशन बड़े थे। पहले आपरेशन के पूर्व और बाद में काफी खून गया, इसलिए दूसरे आपरेशन के समय खून ऊपर से देने की तैयारी रक्खी पर ग्लुकोस से काम चल गया। २२ का आपरेशन ६॥ को शुरू हुआ और ११॥ बजे को पूरा हुआ। मैं तरस्थ भाव से आपरेशन देख रहा था और डाक्टरों की बातें भी सुन रहा था। ११॥ बजे आपरेशन पूरा हुआ, डाक्टरों, नर्सों तथा सेवकों से धन्यवाद देकर थिएटर के बाहर आर्ब्जवेशन में १ क्लाक रखा। १२॥ को जैसे प्रसन्नता पूर्वक गया था, वैसा हँसते हुए लौटा सिर्फ इस बार मेरे हाथ में ग्लुकोज की सलाइन की थैली थी और दूसरे हाथ में पेशाब से जाने वाले खून की थैली।

कहा जाता है कि शरीर से कोई तत्व अलग होना चाहिए, जिससे शरीर से उसके चले जाने पर शरीर को संवेदना नहीं होती फिर शरीर से उस तत्व को अलग कर तटस्थता पूर्वक शरीर को देखें तो वेदना नहीं होनी चाहिए। ऐसा अनुमान करिये, पढ़ा सुना कहिए तो जानकारी थी पर अनुभव हुआ। यह अनुभव प्रभु की कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद एवं आप मित्रों की सद्भावना से हुआ। आपरेशन के दिन को छोड़ कर आसन ध्यान बराबर चलता रहा और आज भी नियमित चलता है। प्रसन्न हूँ। बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु शरीर के धर्म है, वे अपना काम करते रहे, उसकी चिन्ता क्यों ? यदि चिन्ता ही करनी हो तो इसकी करनी चाहिए कि प्राप्त शरीर का उचित उपयोग हो। उसके साथ मलिनता या विषमता का अंश न रहे। चित्र पूर्ण विशुद्ध रहे, किसी को न दुखाया जाय और सबके कल्याण की भावना व आभार हो। सो मेरा प्रयत्न है।

चूँकि आपरेशन बड़े थे। जख्म पर मल्हम पट्टी या ड्रेसिंग किया नहीं जा सकता, इसलिए घाव अंटीसेप्टिक दवाइयों के द्वारा भरना होता है। टेरोमायसिन जैसी तेज दवाई के ४० इन्जेक्शन दिए और दूसरे इन्जेक्शन और दवाइयां अलग इन सबका शरीर पर परिणाम तो होना था, भूख मंद हो गई और शक्ति फिर से पूर्ति होने में विलम्ब लग रहा है, अभी इस महीने तो पूना ही हूँ। ६ जनवरी को फिर से बांबे अस्पताल जाँच के लिए जाना होगा।

मेरी चिन्ता न करें यह शरीर रहे या न रहे मैं तो रहूँगा ही। यदि शरीर से न रहूँ तो आपके हृदय में तो बना ही रहूँगा, यह कम नहीं।

आप सब प्रसन्न हैं, आपके सबके कल्याण की कामना। —रिषभदास के प्रणाम

दिवंगत आत्मा के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित हैं।